P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ावर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

विरेन्द्र सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

कल्पना पारीक
प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
एस.एस.जी.पारीक स्नातकोत्तर,
शिक्षा महाविद्यालय,
जयपुर

सारांश

निःसन्देह आज मानवीय ज्ञान में तीव्रता से वृद्धि हो रही है तथा इससे हो रहे तकनीकी विकास के कारण संसार की भौगोलिक दूरियाँ छोटी होती जा रही हैं। वर्तमान समय में प्रमुख सामाजिक, आर्थिक तथा तकनीकी विकास ने विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों का विकास किया है। अतः ऐसी स्थिति में विद्यार्थी किसी कुशल निर्देशन की आवश्यकता को अनुभव करता है। इसलिए इस स्थिति में विद्यार्थी की क्षमता तथा योग्यता का उचित मूल्यांकन कर उसे सही मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए उसके व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन, एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।इस शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में समानता पायी गयी।

मुख्य शब्द : अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, व्यापक आधुनिकीकरण।

प्रस्तावना

भारत में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग जो बहुत समय तक उपेक्षित, प्रताड़ित रहा तथा शैक्षिक सुविधाओं से वंचित रहा, शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलने के साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में अब अपना विशेष स्थान बनाता जा रहा है। साथ ही इनके व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में भी अत्यधिक परिवर्तन मुखर हो रहा है। प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी योग्यता के अनुसार उसके आधुनिकीकरण के प्रति उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन की सम्भावनाएँ भी बढ़ जाती हैं।

माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी की ऐसी असमंजस पूर्ण स्थिति रहती है जो उसके भविष्य से जुड़ी रहती है। ऐसी स्थिति में यदि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त कर ली जाए तो विद्यार्थियों को सही दिशा, ज्ञान और भविष्य मिल सकता है।इस स्तर पर विद्यार्थियों को सही दिशा मिलने पर ही वे सही दिशा में आगे बढ़ेंगे तथा अपने भविष्य को सुदृढ़ करने में सक्षम होंगे। यह स्थिति एक स्वस्थ समाज के निर्माण एवं सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी।

पाई के अनुसार

''आधुनिकीकरण एक नये प्रकार के मानसिक दृष्टिकोण की उपज है जिसमें मशीनों एवं प्रविधियों के उपयोग के लिए एक नई पृष्ठभूमि का निर्माण होता है। सामाजिक संबंधों का एक नया प्रारूप बनता है।''

वर्तमान और भविष्य की आकांक्षाओं के फलस्वरूप आधुनिकीकरण की व्यापकता के विकास की प्रक्रिया के दौरान जहाँ काफी विकास हो रहा है, वहीं देश में नित नवीन समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं। इन समस्याओं से निपटने व उनका समुचित हल निकालने के लिए देश के वर्तमान और भावी नागरिकों में व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए इस दिशा में पर्याप्त शोधकार्य भी वांछनीय है। इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन हेतु इस समस्या का चयन किया गया।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर परअनुसूचित के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोणका अध्ययन किया गया। इसके परिणाम आधुनिकीकरण के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ हन्ट, क्लाइव (2016) ने एक शोध अध्ययन ''टीचर्स टू अकादमिक्स : द इमप्लीमेन्टेशन ऑव ए मॉडर्नाइजेशन प्रोजेक्ट एट वन यूके पोस्ट 92 यूनिवर्सिटी'' किया जो बतलाता है कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने अनुसंधान कौशल हासिल करने के लिये आधुनिकीकरण परियोजना को कैसे समझा। यादव, कुलदीप कुमार (2013) ने ''ग्रामीण हिन्दू समाज में अन्तः जनित परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण'' विषय का अध्ययन किया और पाया कि हिन्दू परिवारों में जो मुख्य अन्तः जनित परिवर्तन आया है उसमें आधुनिकता एवं व्यक्तिवादिता का प्रवेश हो चुका है। वाजपेयी एवं अन्य (2010) ने अपने शोध अध्ययन ''नये तरीके और भौतिकी अध्यापन की तकनीकों के माध्यम से छात्रों में विष्लेषणात्मक और महत्त्वपूर्ण सोच कौशल के विकास'' से यह निष्कर्ष प्राप्त किया इन नवीन शिक्षण विधियों तथा तकनीकी के उपयोग द्वारा फिजिक्स के छात्रों में विश्लेषणात्मक तथा समालोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद मिलेगी। डांगे, जगन्नाथ लालकृष्ण (2010),फ्रांसिस्का एस. (2010),आनन्द मीनू (2010), दुबे एवं दुबे (2009) ,अग्निहोत्री विभा (2009) ,सफर मोहम्मद एवं अन्य (2009),तिवारी, रीतू एवं त्रिपाठी निशी (2009), श्रीवास्तव, विवेक कुमार एवं कुमार, अमित (2009),अवस्थी, दीपा एवं कश्यप शिल्पा (2009), श्रीनिवासलु, गिरिजा एन (2009) , कटियार, अलका एवं वर्मा, प्रतिभा (2009) ,नागाशेही, मल्लिकार्जुन एवं नुसरत फातिमा (2009), राव, गौरव एवं यादव, नीतू (2009) ,लुंगडीम टी. (2005) ,भास्करण, डी एवं अन्य (2005), मिश्रा, यू. (2005) नें अपने अध्ययन आधुनिकीकरण तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवंअन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोणका अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध का उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोणका अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

ए.के.सी.एम.आई : डॉ. एस.पी. अहलुवालिया व डॉ. ए.के. कालिया

सामाजिक परिवर्तन के प्रति युवाओं की अभिवृत्ति मापन के क्रम में ए.के.सी.एम.आई. का निर्माण डॉ. एस.पी. अहलुवालिया और डॉ. ए.के. कालिया द्वारा किया गया। आधुनिकीकरण शब्द का उपयोग सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

शोध न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में सीकर जिले की माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 105 छात्राओं को; 35 अनुसूचित जाति से, 35 अनुसूचित जनजाति से तथा 35 अन्य पिछड़ा वर्ग से, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करती हैं।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. प्रसरण विश्लेषण अथवा ऐनोवा (एफ–मान)

परिकल्पना–1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1

चरिता के स्त्रोत Variation	स्वतंत्रता के अंश df	वर्गों का योग SS	मध्यमानों का वर्ग Ms	F
समूहों के मध्य Bg	2	665	332.50	0.71
समूहों के अन्तर्गत Wg	102	47613	466.79	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,एवं अन्य पिछड़ावर्ग की छात्राओं और उनके व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण के कुल आँकड़ों के मध्य बनी चरिता का एक–मार्गी विश्लेषण प्रदर्शित करती है।

यहाँ प्रसरण विश्लेषण (f) का मान 0.71 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर 0.01 के एफ अनुपात के मान 4.82 तथा सार्थकता स्तर 0.05 के एफ अनुपात के मान 3.09, दोनों से कम है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना, उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है, निरस्त नहीं की जा सकती है। अर्थात् सीकर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

लेखाचित्र संख्या – 1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

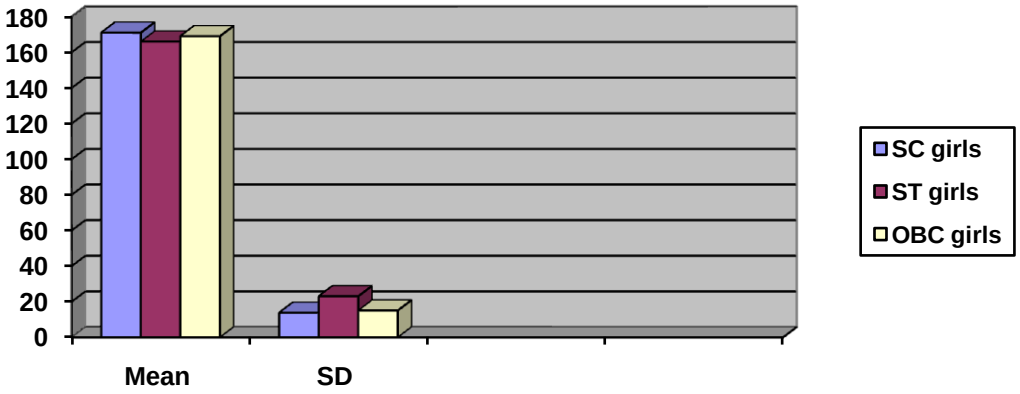

परिणाम

दत्त विश्लेषणानुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। हालांकि अनु. जाति वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (171), अनु. जनजाति वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (166) एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान (169) है। लेकिन इनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर है, वह संयोगवश ही है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राएँ व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण के स्तर की दृष्टि से समान हैं, उनकी व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोणके मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव

1. उचित निर्देशन एवं परामर्श कक्षाओं की व्यवस्था कर व्यापक आधुनिकीकरण के सम्प्रत्यय एवं इसके विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना चाहिए।
2. अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं के व्यापक आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण के विकास हेतु उचित शैक्षिक परिस्थितियों का निर्माण किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता एवं गुप्ता (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
3. *ठाकुर, हरिनारायण (2009), भारत में पिछड़ा वर्ग आन्दोलन और परिवर्तन का नया समाजशास्त्र, कल्पाज़ पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
4. *व्यास एवं गहलोत (2010), राजस्थान की जातियाँ और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।*
5. *शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
6. *हटन, जे.एच. (2002), भारत में जाति प्रथा (अनुवादित), श्री जैनेन्द्र प्रेस, दिल्ली।*
7. *जायसवाल, सीताराम (2008), शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
8. *मंगल, अंशु एवं अन्य (2004), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।*
9. *Social Forces, Volume 88, Issue 2, 1 December 2009, Pages 917–944*
10. *Hamid Yeganeh,(2017) "Cultural modernization and work-related values and attitudes: An application of Inglehart's theory", International Journal of Development Issues, Vol. 16 Issue: 2, pp.130-146*
11. *Sociology of Development, Vol. 1 No. 2, Summer 2015; pp. 321-346*

References: Websites

12. *www.eric.ed.gov*
13. *www.scholar.google.com*
14. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*